19

देहधारी होना

यूहन्ना 1:14-18

''और वचन देहधारी हुआ; और ... हमारे बीच में डेरा किया ...'' (यूहन्ना 1:14)।

देहधारी होने (अर्थात परमेश्वर के हमारे जैसा बनने) के विचार से ही हमारे सिर चकराने लगते हैं! मनुष्य परमेश्वर बनना चाहता है और बेशक हम इसे समझते हैं। जो बात हमें समझ नहीं आती है वह है सर्वशक्तिमान, असीम, अपरिवर्तनीय, अनादि परमेश्वर का एक असहाय बालक बनना! केवल वही ऐसा कर सकता है! सुसमाचार के यूहन्ना के वृत्तांत के द्वारा दो न भूलने वाली बातों में यह अद्‌भुत तथ्य व्यक्त किया गया है: ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था''; ''और वचन देहधारी हुआ; और हमारे बीच में डेरा किया'' (यूहन्ना 1:1, 14)।

परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बना!

यीशु ही परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र बिचवई है (1 तीमुथियुस 2:5, 6)। वह स्वर्ग से उतरी जीवित रोटी है (यूहन्ना 6:48-58)। पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर ने कहा था, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं; इसकी सुनो!'' (मत्ती 17:5; देखें 2 पतरस 1:17, 18)। उसका देहधारी होना ''आश्चर्यकर्मों में से आश्चर्यकर्म'' है।

एक सांसारिक माता का स्वर्गीय पुत्र,
एक स्वर्गीय पिता का सांसारिक पुत्र,
इतना परमेश्वर कि मनुष्य नहीं है,
इतना मनुष्य कि परमेश्वर नहीं है।

यीशु मसीह का आविष्कार नहीं हो सकता था। परमेश्वर ने उद्धार की सच्चाई को यीशु में लपेट कर उसे हमारे बीच चलने फिरने के लिए भेज दिया! यीशु ने कभी किसी को, जिसने उसे परमेश्वर कहा या उसकी आराधना की, डांटा नहीं। हम कह सकते हैं कि मनुष्य बनकर देह में आना ही पवित्र शास्त्र का सार है। यीशु ही *लोगोस* अर्थात परमेश्वर का जीवित वचन है, जो मनुष्य बना! हम मानते हैं कि यीशु परमेश्वर है, पर हमारे लिए यह मानना भी आवश्यक है कि परमेश्वर मनुष्य यीशु है!

मसीहियत निश्चय ही ऐतिहासिक है। यह ''पुराणों में से पुराण'' अर्थात बिना अर्थ के रूपक

नहीं है। सब से बड़ी सच्चाई यह है कि यीशु हमारे जैसा बना, हमारा आदर्श बनकर रहा, हमें परमेश्वर की सच्चाई बताई और हमें परमेश्वर तक लाने के लिए हमारे लिए मर गया।

कुंआरी से जन्म

यीशु का परमेश्वर होना हर हाल में कुंआरी से जन्म से जुड़ा हुआ है (मत्ती 1:18-25)। यदि यीशु के माता-पिता दोनों ही मनुष्य होते तो उसका लहू हमारे लहू की तरह ही किसी काम का नहीं होना था। वह न तो स्वयं जी उठ सकता था और न किसी और को जिला सकता था। ह्यूगो मेकोर्ड ने कहा है, ''बिना कुंआरी से जन्म के मसीहियत बिना लहू से उद्धार और बिना पुनरुत्थान वाला धर्म बन जाता है। यह केवल इस जीवन के लिए सामाजिक सुसमाचार बनकर रह जाता है।''[1] मनुष्य को मसीह के मनुष्य होने से उतनी ठोकर नहीं लगती, जितनी उसके परमेश्वर होने से लगती है। मनुष्य रहते समय यीशु में मंच पर दिखाने की तरह केवल मनुष्य होने की भावनाएं ही नहीं थी। बाग में सचमुच उसका पसीना लहू की बूंदों की तरह गिर रहा था (लूका 22:44)। अपने लिए उसका पसंदीदा शीर्षक ''मनुष्य का पुत्र'' था, जो नये नियम में अस्सी से अधिक बार मिलता है। यीशु के परमेश्वर होने का बेहतरीन प्रदर्शन उसके मनुष्य होने में मिलता है।

कई बार हम सुसमाचार का स्वागत संदेह से करते हैं, परन्तु बुरी खबर को मानने में एक मिनट नहीं लगाते। पूरी सच्चाई सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती। निरोल सच्चाई स्वयं को खुद साबित कर लेती है। परमेश्वर को परमेश्वर के रूप में चुने जाने की आवश्यकता नहीं है। वह तो परमेश्वर है। यही सच्चाई है। आज धर्म की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा, धर्मशास्त्रीय शिक्षा और सच्चाई है!

यीशु प्रभु है

इसी यीशु को जो मनुष्य बना, प्रभु भी बनाया गया था! पौलुस ने लिखा:

> इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की पहिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

उसके प्रभु होने का यह तथ्य बहुत आसान है, परन्तु बहुत गहरा भी है! इस पर विचार करें: हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, जिसे हम देख नहीं सकते और उसके पुत्र की खूबी के आधार पर स्वर्ग में जाने की उम्मीद करते हैं, जिसे हमने देह में नहीं देखा है। ऊपर को जाने का रास्ता नीचे से होकर जाता है यानी भरा हुआ होने के लिए अपने आपको खाली करना पड़ता हैं। हम सही किए जाने के लिए गलत होने को मानते हैं। जो सबसे ताकतवर हैं, वे सबसे कमज़ोर हैं; जो सबसे गरीब हैं, वे सबसे अमीर हैं। हम जीवित रहने के लिए मरते हैं और पाने के लिए देते हैं।

कलवरी पर बीच का क्रूस मसीह का नहीं, यह तो हम सब का था। यीशु मरने के लिए मनुष्य बना था। सुसमाचार के यूहन्ना का वृत्तांत का पूरा ज़ोर यीशु के अनादि महत्व पर है। पत्रियां बनकर जीने की सामर्थ सुसमाचार की पुस्तकों में क्रूस की कहानी से ही मिलती है।

यह सच्चाई परमेश्वर के ''अद्‌भुत अनुग्रह'' को दिखाती है। देहधारी होकर यीशु ने अपने आप को हमेशा के लिए मनुष्यजाति से जोड़ लिया। न हम कभी परमेश्वर थे और न कभी होंगे! यीशु पूरी तरह दीन *भी* बना और उसे ऊंचा *भी* किया गया। उसके ऊंचा होने में उसके मनुष्य होने को खत्म नहीं किया, बल्कि उसके मनुष्य होने को महिमा दी।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]जीज़स क्राइस्ट, ''द डिवाइन सन ऑफ़ गॉड,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अंग्रेज़ी संस्करण, मई 2000):6 में ह्युगो मेकोर्ड, ''जीज़स: अवर सेवियर।''